मोलभाव का रहस्य

वीरसिंह गाँव से विद्यासागर के पिता ठाकुरदास बन्धोपाध्याय कलकत्ता चले आए थे। कुछ तो रोज़गार करना होगा! वरना माँ और पाँच-पाँच भाई-बहनों के खाने-पहनने का इन्तज़ाम कैसे होगा? उनके पिता रामजय तो कब के लापता हो गए थे। कुछ ही दिनों में एक नौकरी मिल भी गई। तनख्वाह कितनी? दो रुपए! उनके रहने का अपना एक ठिकाना था, इसलिए पूरे पैसे वे गाँव भेज दिया करते थे।

शंख घोष

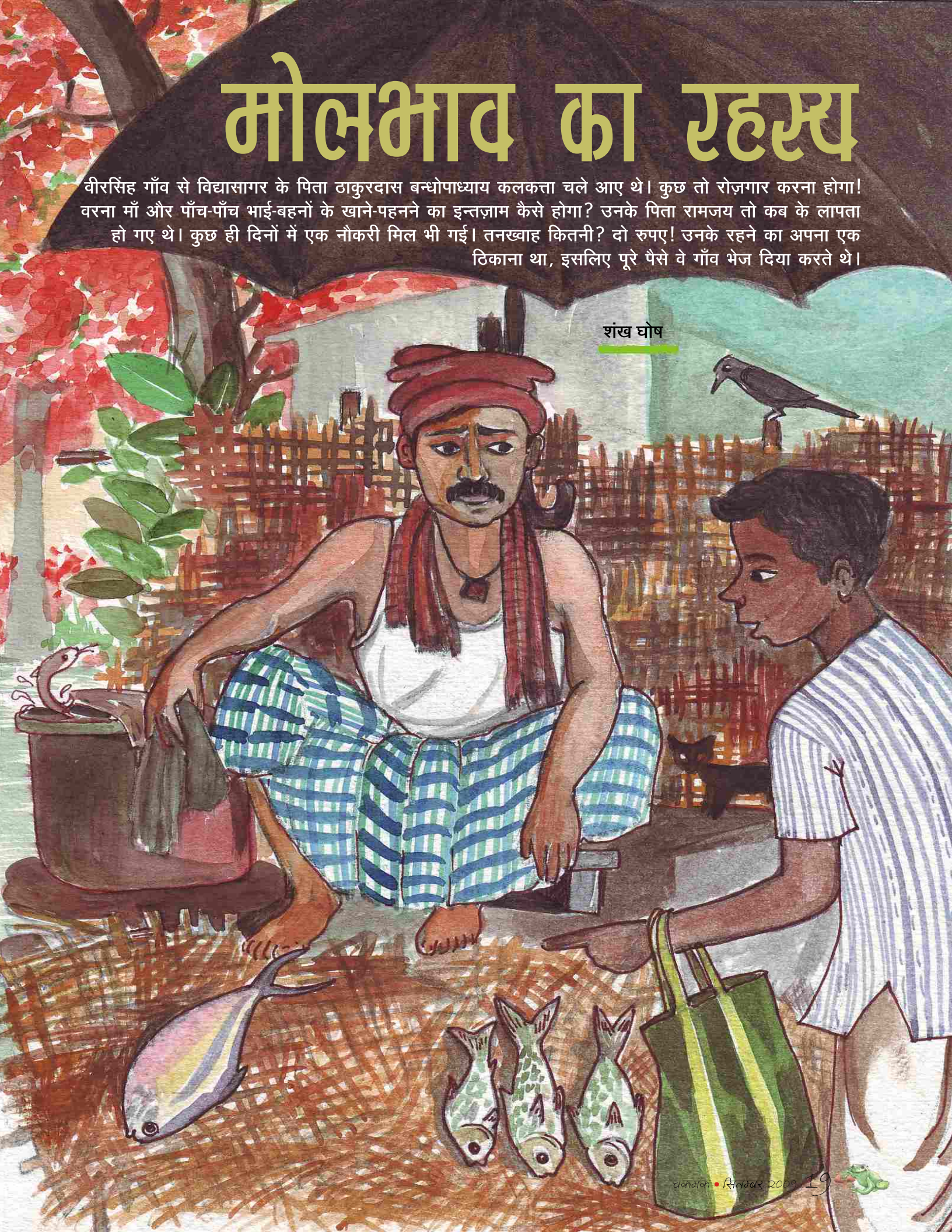

कामधाम अच्छा करने लगे तो बाद में तनख्वाह थोड़ी बढ़ भी गई। पूरे पाँच रुपए मिलने लगे और आगे चलकर दस रुपए। यह खबर सुन गाँव भर में उत्सव-सा मच गया। "बाप रे! इतनी तनख्वाह? पता है हमारे ही गाँव का लड़का है!"

बाज़ार में खड़े-खड़े नीलू हाल ही में सुने इस किस्से के बारे में ही सोच रहा था। सोचते-सोचते उसे बड़ा आश्चर्य हो रहा था! इतने से पैसे में उन लोगों का घर भला कैसे चलता था। नीलू को अपने घर का ख्याल आया। उसके यहाँ तो केवल बाज़ार के लिए ही हर रोज़ आठ आने खर्च हो जाते हैं। तो फिर महीने भर का कितना हुआ? पन्द्रह रुपए। केवल बाज़ार के लिए ही पन्द्रह रुपए और ठाकुरदास के महीने की पगार ही दस रुपए थी!

और फिर आठ आने में हर वक्त थोड़े ही पूरा होता है? अकाल के वक्त तो सिर्फ चावल ही एक रुपया सेर हो गया था। वो भी अगर मिल जाए तो! और उस दिन तो हिलसा मछली के ही पूरे पन्द्रह आने लग गए थे?

उस दिन पूरा काण्ड ही हो गया। बाज़ार के मछली वाले हिस्से में घूमते-घूमते नीलू को एक हिलसा बहुत पसन्द आ गई। बड़ी थी। पेट वाला हिस्सा कितना चौड़ा था। पूरी मछली एकदम चकाचक थी। दाम कितना? दुकानदार ने बताया, एक रुपया। क्या कहता है भला? एक मछली एक रुपए की? उसने कहा, "कुछ कम कीजिए ना?" "नहीं मुन्ने, कम-वम नहीं होगा। चलो यहाँ से।" वह वहाँ से आगे बढ़ जाता है। लेकिन इधर-उधर घूम के फिर उस मछली के आगे खड़ा हो जाता है। पूछता है, "होगा?" मछलीवाला उसे घूरता है और वह फिर वहाँ से हट जाता है। थोड़ी देर बाद लौटकर फिर वहीं आता है। लेकिन इस बार कुछ कहता नहीं। उसको चुपचाप खड़े देखकर शायद दुकानदार को थोड़ी दया आ गई। उसने कहा, "दो, दो, पन्द्रह आना ही दो। ले जाओ मछली, जब तुम्हें इतनी भा ही गई है।"

ऐसा नहीं कि घर पहुँचकर माँ के सामने थैला उलटते समय उसका दिल बिल्कुल ही धक-धक नहीं कर रहा था। "दाम सुनकर माँ अगर नाराज़ हो जाए तो?" लेकिन माँ ने कुछ नहीं कहा। मुग्ध भाव से केवल मछली को देखती रही। थोड़ी देर बाद जानना चाहा, "मछली तो अच्छी है, कितना दाम लिया?"

नीलू ने डरते-डरते कहा, "पन्द्रह आना।" सुनकर माँ ने कुछ कहा नहीं।

थोड़ी देर बाद जब वह रसोईघर के बाहर आँगन में इधर-उधर मँडरा-सा रहा था तब भीतर से माता-पिता की बातचीत के कुछ हिस्से उसके कानों में पड़े। किसी सवाल के जवाब में पिताजी से माँ कह रही थी, "इस नीलू को कितना साहस हो गया है, देखो भला। पन्द्रह आना देकर एक मछली खरीद लाया है!"

अपने को साहसी जान नीलू के चेहरे पर इतनी देर में थोड़ी मुस्कान उभर आई। लेकिन एक बार जब नीलू कलकत्ते में रांगाकाका के यहाँ घूमने गया तो उसे बाज़ार के बारे में दो नए ज्ञान मिले।

सियालदह स्टेशन में ट्रेन के पहुँचते-पहुँचते शाम हो गई थी। रांगाकाका उन सबको लेने स्टेशन पहुँचे थे और प्लेटफॉर्म पर खड़े थे। गठरी-गुठरी और दल-बल लेकर उन्होंने चलना शुरू किया। रास्ते पर आने के बाद भी पैदल चलते देख नीलू ने पूछा था, "घोड़ागाड़ी पर नहीं चढ़ेंगे क्या?"

"घोड़ागाड़ी? घोड़ागाड़ी क्या होगी। बस थोड़ी दूर पर ही तो रहते हैं।"

सचमुच, कुछ कदम चलने के बाद, बैठक खाना रोड के एक ठिकाने पर हम सभी पहुँचे। "जगह लेकिन बहुत ही कम है।" रांगाकाका ने कहा।

माँ ने कहा, "उससे क्या हुआ? हम ही भला कौन राजमहल में रहने वाले हुए!"

"लेकिन खाना-पीना आज महलों जैसा ही करना होगा। चल तो नीलू मेरे साथ, बाज़ार से देखकर एक अच्छी-सी मछली खरीद लाते हैं।"

नीलू एकदम अवाक था। शाम हो गई थी। रास्ते के किनारे बत्तियाँ जल गई थीं। इस वक्त बाज़ार? इतनी शाम को? बाज़ार तो सुबह लगता है। अपना अचरज प्रकट कर देने के कारण नीलू को सुनना पड़ा, "भाभी, आपका यह लड़का एकदम से गँवई है। चल देखेगा, शाम का बाज़ार।"

शाम के बाद भी बाज़ार लगता है, यह मुझे पहला ज्ञान मिला। दूसरा ज्ञान मिला बाज़ार पहुँचने के बाद। ऊँचे-ऊँचे सीमेंट के चबूतरों पर मछली वाले बैठे थे।

उनके आस-पास तेज़ रोशनी थी। साबुत और कटी हुई मछलियों के ऊपर उस रोशनी की छटा चकमक कर रही थी। मछलियों को काटकर क्यों रखा है? मछलियाँ क्या कभी काटकर भी बेची जाती हैं? रोशनी के सामने खड़े होकर रांगाकाका पूछ रहे थे, "सेर कैसे दिया?"

सेर? मछली के बाज़ार में आकर सेर पूछते हैं? ऐसा तो इस जन्म में नीलू ने कभी नहीं सुना। सेर तो पूछा जाता है चावल-दाल खरीदते वक्त या फिर तीन पैसे का एक सेर दूध माँगते समय। मछली के लिए तो नीलू लोग यही पूछते हैं कि यह मछली कितने की, वह मछली कितने की। अगर मछलियाँ छोटी-छोटी हुईं तो उन्हें अलग-अलग ढेर लगाकर रख दिया जाता है और ढेर का दाम होता है। मछली की दुकान में तराजू-बटखरा भी रहते हैं यह उसके लिए नया अनुभव था।

अलबत्ता, नीलू को एक और ज्ञान मिला था। लेकिन कलकत्ता में नहीं, अपने ही गाँव के घर पे। वह उसकी माँ का एक किस्सा था।

घर के लिए रोज़ नीलू ही बाज़ार से सामान लाता है। लेकिन कभी-कभी कोई फेरीवाला उनके दरवाज़े के सामने आकर हाँक लगा देता है। कभी बरतन-सरतन लेकर कभी कपड़े-लत्ते लेकर और कभी फल-मूल के साथ। माँ दरवाज़े के अन्दर ज़मीन पर बैठ जाती है और उसके ठीक सामने दरवाज़े के बाहर फेरीवाला। इसके बाद शुरू होता है मोलभाव का खेल। वह कोई दाम बोलता, फिर माँ कुछ और। इस तरह होते-होते कोई एक दाम तय होता।

उस मोलभाव में नीलू की कोई रुचि न थी। वह इस सब के पास भी नहीं फटकता था। लेकिन उस दिन आम वाला अपनी बाड़ी-सी टोकरी लिए पहुँचा। रसोई में व्यस्त माँ को वह खींचकर ले आया और आमवाले के सामने दरवाज़े के पास बिठा दिया।

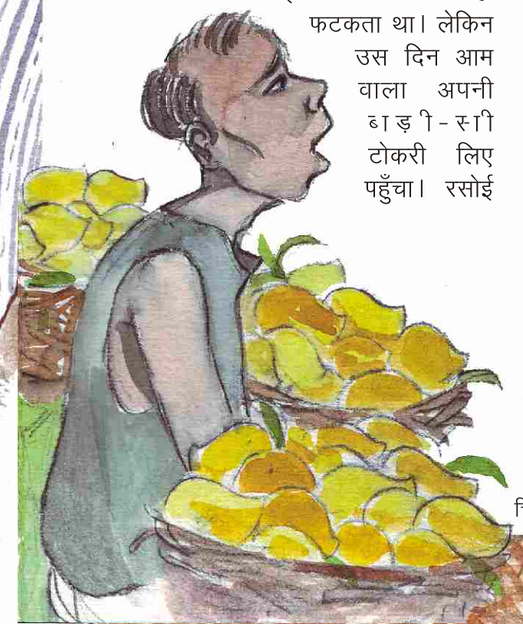

खरीदने की मानो कोई इच्छा ही नहीं, ऐसे स्वर में माँ पूछती हैं, "कितने का? कितने का दोगे तुम सौ?"

"आप तो जानती ही हैं, आजकल दाम सवा रुपए है।"

"सवा रुपए? क्या कहते हो!"

माँ ने ऐसा कहा ज़रूर लेकिन साथ ही साथ टोकरी से आम चुन-चुनकर अलग रखने लगी। बातों-बातों में एक रुपया सौ पर सौदा पक्का हुआ। उसके बाद माँ एक अजीब-सी बात पूछ बैठी, "सौ में कितने होंगे?"

इसका क्या मतलब? माँ क्या-क्या कहती है। सौ में कितना होता है, माँ क्या यह भी नहीं जानती? अस्सी-नब्बे-सौ। माँ को क्या गिनना भी नहीं आता? कितनी शरम की बात है! आमवाला भला क्या सोचेगा?

लेकिन उसको और भी अचरज में डालते हुए आमवाले ने कहा, "वह मैं अलग से क्या बोलूँ, वही एक सौ दस का सौ होगा।"

माँ ने कहा, "एक सौ दस? क्या बोलते हो तुम भी? अभी उसी दिन तो एक सौ बीस का सौ दे गया एक जन। नहीं-नहीं, फिर तो लेना नहीं होगा।"

माँ उठने को हुई। व्याकुल होकर आमवाले ने कहा, "उठती क्यों हैं? अच्छा ठीक है एक सौ पन्द्रह देता हूँ एक सौ बीस के लिए अब और मत कहिएगा, माँ।"

माँ तब मानो घोर अनिच्छा के साथ एक सौ पन्द्रह पर ही राज़ी हो गई। आम गिन के उठाने लगी। नीलू ने उस दिन जाना एक सौ कभी एक सौ दस होता है और कभी एक सौ पन्द्रह।

लेकिन गणित की कॉपी में नीलू अगर 100=115 लिख दे तो मास्टर साहब नम्बर देंगे?

— बांग्ला से अनुवादः संजय भारती

चित्र व डिज़ाइनः कनक